द्वितीय अध्याय

कवि माण्डा नरेश रुद्र प्रताप सिंह का जीवन परिचय

राजा रुद्र प्रताप सिंह का जन्म 18वीं शती ईसवी के अन्त में हुआ था। कवि का जीवन–परिचय और उनके परिवार के बारे में विस्तृत जानकारी कवि की कृति रामखण्ड रामायण के वंशपथ, दूतपथ और राजपथ में विद्यमान है। इन पथों में अनेक संदर्भ तथा संकेत विद्यमान है जिनसे कवि के जीवन–परिचय का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।

वंशपथ (बालकाण्ड) के आदि में कवि रुद्र प्रताप ने अपने पिता राजा ऐश्वर्य सिंह की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। कवि अपने पिता को सामान्य पुरुष नहीं अपितु नर–व्याघ्र कहते हैं–

uj0;k?k ,Lo;l u'i dkU;dCt j[kokjA
vklen Hkfj [;kr tkb Hkku ipØkdkjAA[1]

वंशपथ में ही कवि अपने पिता, माता एवं स्वयं को उनका पुत्र होने का भी उल्लेख करता है–

rfg dy ekul cjVk tkuhA u'i ,Lo;flg d jkuhAA
ifrcrk dj rk dy jhrhA tfg lfejr u ifrcr HkhrhAA
jRuk[;k lk mRre ekrkA tk Hkb ee ljhj d nkrkAA
#n irki uke g ekjkA egkjkt ,Lo; fdlkjkAA[2]

कवि के पिता राजा ऐश्वर्य सिंह और माता रत्ना थीं। महाराज ऐश्वर्य सिंह का देहान्त प्रयाग में संवत् 1863 सन् 1806 ई0 पौष शुक्ल तृतीया रविवार को मकर के रवि में सन्ध्या समय हुआ। इनकी रत्ना नाम की प्रधान रानी अपने पुत्र

---

1 रामखण्ड रामायण, वंशपथ, दो0 30, विश्राम–1, पृ0 5
2 रामखण्ड रामायण, वंशपथ, विश्राम 1, दो0 33, पृ0 6

श्री रुद्रप्रताप सिंह जी के पालन के लिए जीती रहीं, अपने पति के संग सती नहीं हुई।[1] कवि अपने वंश का वर्णन अपना परिचय देकर समाप्त कर देते हैं। वह आगे की पीढ़ी का उल्लेख नहीं करते। माण्डाराज–वंशावली से हमें ज्ञात होता है कि कवि माण्डा नरेश रुद्रप्रताप सिंह के पुत्र छत्रपाल सिंह हुए। छत्रपाल सिंह से राम प्रताप सिंह तथा राम प्रताप सिंह से राम गोपाल सिंह उत्पन्न हुए। रामगोपाल सिंह संतानहीन थे। अतः डइया के राजा भगवती प्रसाद सिंह के द्वितीय पुत्र विश्वनाथ प्रताप सिंह को उन्होंने दत्तक पुत्र के रूपक में स्वीकार किया। विश्वनाथ प्रताप सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और तत्पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुए।

(क) वंश परिचय

कवि माण्डा नरेश रुद्रप्रताप सिंह 19वीं शताब्दी ईसवी तक विद्यमान थे। 'रामखण्ड रामायण' की रचना कवि ने सन् 1820–1830 के मध्य की थी। अपने वंश वर्णन के प्रसंग में वंशपथ में कवि ने एक जगह घोषणा की है कि निज वंश वर्णन वह अपने अन्तिम ग्रन्थ में करेगा–

ijijk tkb cl cMkbA dfggk xFkRrj eg tkbAA[2]

और अन्तिम पथ राजपथ में कवि ने अपनी योजना को साकार किया। वह राजपथ में अपने वंश के एक–एक व्यक्ति का उल्लेख करते हैं। कवि भूमिका बांधते हुए वंश–वर्णन के लिए उद्यत होते हैं–

,fg folke iuj dFkk djrk dk dy xkuA
clkoyh ic/k er dhUgk pgr c[kkuAA[3]

---

1 रामखण्ड रामायण, उत्तरकाण्ड की भूमिका, पृ0 4
2 रामखण्ड रामायण, वंशपथ, विश्राम 1, दो0 30, चौ0 4, पृ0 5
3 रामखण्ड रामायण, राजपथ, दो0 951, पृ0 456

सोमवंशी जयचन्द का राज्य बनारस तक था। इनको पुत्र न था इसलिए इनके बाद इनके भाई मानिक चन्द राजा हुए।[1]

अपने कुल के राजा मानिकचन्द से कवि वंशारम्भ करते हुए लिखते हैं–

ekfuD;pn uj;l dk fu:i vYgno egkcyhA
dYgkjdkuu d;tjke i;pM l=;u dk nyhAA[2]

माणिक्यचंद राजा को अल्हदेव, अल्हदेव को माहुल्यदेव, माहुल्यदेव को भीषमदेव, भीषमदेव को भरतदेव, भरतदेव को सोमदेव, सोमदेव को चाहिररावदेव, चाहिरराव को रूपदेव, रूपदेव को माहुलदेव, माहुलदेव को धर्मार्कदेव, धर्मार्कदेव को मिश्रदेव, मिश्रदेव को, पूरनमल्लदेव, पूरनमल्लदेव को तालदेव, तालदेव को अलखदेव और अलखदेव को भूराज सिंह हुए।[3]

भूराज सिंह के तीन पुत्र थे। मुहम्मद गौरी ने इनके तीनों पुत्रों को पराजित किया था।

i;fu Hkjkt fl;g rkgh dA d;tjor cy Hkt okgh dAA
frud rhfu ru; l;u; x;g ijkØeo;rA
t= r= gk; Hkt; =; Hk;; xkjh ujd;rAA[4]

पराजित होने के पश्चात् वे तीनों गोरी के डर से भागे। उनमें मझिला लड़का कोल भीलों को मार कर (कारूख) माँडा के राजा हुए। उनका नाम गूदन्य देव था।

rft ljdkj dM ju gkjA gfj le ,jkofrfg fugkjAA
[kl d;jkru Hkhyu ekjhA ekf>y d:[k n;l vf/kdkjhAA[5]

---

1 रामखण्ड रामायण, उत्तरकाण्ड की भूमिका, पृ0 6
2 रामखण्ड रामायण, वंशपथ, छंद 386, पृ0 456
3 रामखण्ड रामायण, उत्तरकाण्ड की भूमिका, पृ0 10
4 रामखण्ड रामायण, राजपथ, दो0 953, पृ0 457
5 वही, दो0 954, चौ0 1–2, पृ0 457

उस समय करुष कोल–किरात–भीलों का क्षेत्र था। करुष देश का एक बड़ा हिस्सा कालान्तर में माण्डा क्षेत्र घोषित कर दिया गया। गंगा और विन्ध्याचल के मध्य स्थित इस प्राकृतिक प्रदेश का पौराणिक उल्लेख आदि कवि वाल्मीकि ने अपनी रामायण में किया है–

rfeUn efyu nok _"k;Üp rik/kuk%AA
dy'k% Luki;kek lk ey pkL; iekp;uA
bg HkE;k ey nUROk nok% dk:"keo pA
'kjhjt eg.nL; rrk g"k iifnjA
fuelyk fu"d:iÜp 'k) bUnk ;FkkHkkorAA
rrk n'kL; lqihrk oj iknknuRreeA
bek tuink LQhrk [;kfr ykd xfe";r%AA
eynkÜp d#"kkÜp eek³xey/kkfj.kkA
lk/k lkf/ofr r nok% ikd'kklueczouAA
n'kL; itk rk n"Vok d'rk 'kØ.k /khe rkA
,rk tuink LQhrk nh?kdkyefjneAA
eynkÜp d:"kkÜp efnrk /ku/kkU;r%AA[1]

कवि राजा रूद्रप्रताप सिंह ने उसी करुष देश के अन्तर्गत माण्डा राजधानी का वर्णन किया है–

efuekMC; ijh l[kjklhA jkt/kkfu rg Hkifr oklhAA[2]

कवि ने गूदनदेव और उनके ज्येष्ठ पुत्र जसवंत सिंह को वीर पुरुष के रूप में याद किया है। जसवतं सिंह ने अवध सेनापति दलेल खाँ को हराया था।

egkjkt tlor dljh ipMchj
/khjfgeoku juoku Hkfe okpyA
db ckj t)u fc:)u ek Øn gk;

---

1 वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 24, श्लोक 19–24
2 रामखण्ड रामायण, वंशपथ, दो0 31, चौ0 8, पृ0 5

te toukfu lfurkfu ljrk gyAA
dnekfu Nrt djr tlor HkV
clfuNdkfu dkfydk ijkfu d Hky
nk:u nyy[kku tx fct;h eghi
tou&r[kkjfcn nf[k Hkku d xyA[1]

राजपथ में ही इसी क्रम में कवि रूद्र प्रताप सिंह अपने बाबा पृथ्वीपाल (पृथिवीपति) और पिता ऐश्वर्य सिंह का वर्णन विस्तार से करते हैं–

fiFohiky fclky gfj lvu fgn m|krA
tfg yoU; ij gk; x,Å ekj fnok [k|krA
rkl ru; ,Lot gjhlkA dy Hk[ku ekug fu[k/khlkAA
dyufyuh ikyu fdy HkkuA lr l=u dg nk:
fØlkuAA[2]

कवि कहते हैं कि मैं इन्हीं महान राजा ऐश्वर्य सिंह का पुत्र हूँ। ऐश्वर्य सिंह बड़े बहादुर थे। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने इन्हीं की सहायता से प्रयाग में अपना अधिकार स्थिर किया। ब्रिटिश गवर्नमेंट नें भी इस बदले में सर्वदा के लिए मांडाराज को अचल कर अभय–प्रदान किया–

txr t;h tx dfj tx Nk;kA vkleu yfy r tl C;kikA
ufg ,Lotflg le vkukA dk iVrfj fui fexk egkukAA[3]

कवि कहते हैं कि मैं ऐश्वर्य सिंह कुमार रुद्र प्रताप पावन रामचन्द्र कथा कह रहा हूँ।

,Lotflg dekj eb efr en :i irki gmA

---

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ, कवित्त 390, पृ0 458–459
2 रामखण्ड रामायण, राजपथ, दो0 962, चौ0 1–2, पृ0 462
3 रामखण्ड रामायण, राजपथ, कवित्त 395, चौ0 7–8, पृ0 462

dfy dy[k ikou dju lcju jkepUn dFkk dgmAA
lslkj /kkj vikj umdk ;g pfjr j?kqchj dhA
v?ktU; vke; vfXu ?ku cu gjfu fex fui ihj dhAA
:n irki tFkk Loer d: jkek;ulkjA
jkepfjr mjeh mnf/k dh xfu ikob ikjAA[1]

इस प्रकार महाराज ऐश्वर्य सिंह के महाराज रूद्र प्रताप सिंह जी हुए जिन्होंने इस सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण की रचना की।

(ख) राज्य काल

भक्ति आन्दोलन के परिणामस्वरूप सन्तों, कवियों ने राम भक्ति और रामकाव्य की अजस्रधारा प्रवाहित की। कवि राजा रूद्रप्रताप सिंह भी इस परम्परा से प्रभावित हुए होंगे। इस दौर में राजघरानों में साहित्यिक उदासीनता नहीं थी। राजा लोग कवियों, कलाकारों का आदर करते थे। वे स्वयं भी साहित्य–साधना के प्रति आस्था रखने वाले होते थे।

कवि ने रामभक्ति का गुणगान विस्तार से किया। कवि सर्वत्र गहराई में डूबता है। कवि के रचनाकाल का समय राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टि से उथल–पुथल का समय था। रामखण्ड रामायण की रचना कवि ने सन् 1820–1830 के मध्य में की थी। यही मराठों के पराभव का भी समय था। 1820 में मराठे अंग्रेजी हुकूमत के अधीन हुए और अंग्रेजों के आगे अपनी शक्ति खो बैठे। परिणामस्वरूप अंग्रेजों का आधिपत्य सम्पूर्ण भारत में कायम हो गया। उत्तरकाण्ड (राजपथ) में कवि अंग्रेजों के प्रभुत्व और मराठों के पराभव का उल्लेख करते हैं–

rhFkjkt egHk,m ujslkA fn; tkxhj xMifr nslkAA
dkMk uxj ejgBu dhUgkA lg lyVhu jkt yoyhUgkAA[1]

---

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ, छंद 398, दो0 964, पृ0 464

कवि ने अंग्रेजों के लिए अधिकांशतः 'गुंड' शब्द का प्रयोग किया है और उनकी सत्ता के लिए 'गुंडराज' शब्द का प्रयोग किया है। इस शब्द प्रयोग से अंग्रेजों द्वारा बलात षड़यंत्र करके राज्य स्थापित करने की ध्वनि व्यंजित होती है–

> xqM fccl gj eksfnuh vklryt fuf/k rhjA
> jkeLoj u;iky yks ,db pØ l/khjAA[2]

जब भारत में अंग्रेजों ने मराठों को पराजित किया उस समय इंग्लैण्ड में जार्ज चतुर्थ सम्राट थे। कवि ने सम्राट जार्ज चतुर्थ के लिए अंग्रेजी शब्द किंग जारिज फोरड का प्रयोग किया है–

> fd³· tkfjt QkjMcyh vklenifr lkbA
> ,fg volj eks fgn&efg xqMjkt cl tkbAA[3]

इसी समय रास साहब प्रयाग में मजिष्ठर के पद पर आसीन थे। रास साहब अत्यन्त उदार, जनता के प्रिय एवं सच्चे पक्षधर थे। कवि ने 'रामखण्ड रामायण' के 'कोशलपथ' में उनका भी उल्लेख किया है। किंग रास को कवि ने मनु–सदृश् बताया है–

> fgn cL; ,fg dky xqM lj i:[;kr efgA
> fdx jkl efgiky ikyr efnfu eu&lfjlAA[4]

लार्ड रास नाम के कोई गवर्नर जनरल सन् 1820 में प्रयाग में कार्यरत नहीं थे बल्कि लार्ड हेस्टिंग उस समय सातवें गवर्नर जनरल थे। अतः इससे साफ है कि महाराज रूद्रप्रताप सिंह जी ने मजिष्ठर ही को किंग (सम्राट) कहा है।

---

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ, विश्राम 53, दो0 948, चौ0 3–4, पृ0 454
2 रामखण्ड रामायण, राजपथ, विश्राम 53, दो0 949, पृ0 454
3 रामखण्ड रामायण, अटवीपथ, विश्राम 27, दो0 477, पृ0 232
4 रामखण्ड रामायण, कोशलापथ, विश्राम 47, सो0 247, पृ0 393

कवि ने पिता की मृत्यु के 14 वर्ष बाद सन् 1820 में कोशलापथ पूर्ण किया। कोशलापथ के अन्त में लिखा है–

,d lgl cl lr ux lkrkA fcØekd lcr fc[;krkAA[1]

कवि के पिता ऐश्वर्य सिंह बड़े बहादुर थे। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने इन्हीं की सहायता से प्रयाग में अपना अधिकार स्थिर किया। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने भी इस बदले में सर्वदा के लिए मांडाराज को अचल कर अभय प्रदान किया।[2]

इस समय भारत का इतिहास नयी दिशा और दशा को प्राप्त कर रहा था। कवि रामखण्ड रामायण में अपने युग का इतिहास एवं संस्कृति के नये अध्यायों को काव्यबद्ध करता है। कवि की दृष्टि बड़ी व्यापक रही है। परम्परागत जो बातें कवि ने देखी या सुनी उसका भी उल्लेख उन्होंनें बड़ी चतुराई से कर दिया। कवि युगीन द्रष्टा थे। वह प्रकृति की गोद में पले बढ़े थे। प्रौढ़ होने पर उन्होंने प्रकृति को अपने से अलग नहीं किया। झरने का संगीत और जंगल के पक्षियों का मधुर संगीत–कलरव वह सुन चुके थे। पर्वतों, जंगलों पर बिखरी अमृत औषधियों से वह पूरी तरह परिचित थे। उन्होंने अपना अनुभव और संवेदना को अपने काव्य में उड़ेल देने का सफल प्रयास भी किया है। उनकी दृष्टि राई से लेकर पर्वत तक पर पड़ती है। जीवन में जो भोगा और जाना उसे रचनाबद्ध कर दिया।

जिस इतिहास–अवधि में कवि ने स्वयं जीवन जिया उस पर उनकी पकड़ अच्छी है। अंग्रेजी राज्य का वर्णन कवि पूरी निष्ठा और तन्मयता से करते हैं। गुंड (अंग्रेज) राज्य की प्रशंसा में वह लिखते हैं–

^bfe xMu dh jkt gfy u ldb tg pDdobA
lu =Lr ufg ykt lx pjfg fdD;ku fexAA
,rk fui cyor Hkkx dhUg ;g efnuhA

---

1 रामखण्ड रामायण, कोशलापथ, विश्राम 47, दो0 691, चौ0 8, पृ0 392
2 पं0 सुधाकर द्विवेदी, उत्तरकाण्ड की भूमिका, पृ0 4

vk tf/k fØLukdr lg xMu Hkifr HkuAA[1]

इसी क्रम में उन्होंने कुतुबुद्दीन ऐबक, रज़िया सुल्तान, अलाउद्दीन खिलजी, गयासुद्दीन, शमसुद्दीन इत्यादि सुल्तानों का नामोल्लेख किया। अन्ततः कवि इन सुल्तानों को मुहम्मद गोरी के वंश में उत्पन्न होने की बात कहते हैं–

o'k lgkcnnhu bfe HkkX;k cu vorlA
Nhu Hk, vk;s cgfj ifu xkjh xu o'kAA[2]

गोरी के वंश वर्णन के बाद कवि ने बाबर, हुमायूँ, अकबर आदि की अत्यंत प्रशंसा की है। इसके पश्चात् जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब और मुगलवंश का पतन और अंग्रेजों के एकछत्र राज्यकाल का कवि रूद्र प्रताप वर्णन करते हैं। राजनैतिक दृष्टि से यह समय अंग्रेजों के प्रभुत्व के कारण बहुत उथल–पुथल का समय था।

रावण द्वारा सीता को बलात् हथियाने और अंग्रेजों द्वारा भारत माता को जबरदस्ती पराभूत करने में कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं है। अंग्रेजों की इस नीति से कवि का मन अवश्य आहत हुआ होगा और वह अपने रामखण्ड में जिस राम से वानरी सेना के साथ रावण से मुकाबला करने की अपेक्षा रखता है वही कहीं भारतीय जनता की करोड़ो भीड़ के साथ अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए गांधी भी आगे आते हैं। माना जाय तो दोनों में राम–कथा के सीताहरण प्रसंग में बहुत साम्य है।

हर कवि युग–सत्य और युग–पीड़ा को अपनी तीव्र निगाह से देखता है और संभवतः यही सत्य और यही पीड़ा उसकी संवेदना को मर्माहत और बाध्य करती है। इसलिए कवि युग–सत्य को स्वयं और अपने काव्य में भी जीता है।

---

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ, विश्राम 53, सोरठा 145, 146, पृ0 456
2 रामखण्ड रामायण, राजपथ, विश्राम 53, दो0 934

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी साहित्य इसका ज्वलन्त उदाहरण है। लेकिन यह ध्यान देने की बात है कि युग–सत्य की दृष्टि से स्वतंत्रता के बाद अथवा उसके समकालीन मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित साकेत महाकाव्य ही इस सत्य का निर्वाह प्रथमतः करता है।

कवि रूद्र प्रताप इसका श्री गणेश बहुत पहले कर चुके हैं। सम्भवतः कवि गोस्वामी तुलसीदास से प्रभावित रहे हों। तुलसीदास 'कवितावली' के एक पद में अकबर के तथाकथित शान्तिपूर्ण शासन में अशान्त एवं दुःखी जनता का एक सच्चा चित्र उपस्थित करते हैं जहाँ कृषक, भिक्षुक, व्यापारी सब जीविका से शून्य हो गए हैं और तुलसी कातर होकर संकट में प्रभु का स्मरण करता है–

[krh u fdlku dk] fHk[kkjh dk u Hkh[k cfy]
cfud dk cfut] u pkdj dk pkdjhA
thfodk&fcghu ykx lh/keku] lkp&cl]
dg ,d ,du lk ^dgk tkb] dk djh*
cn g ijku dgh] ykdg fcykfd;r]
lkdj lc i jke jkoj d'ik djh\
nkfjn&nlkuu nckb nuh] nhuc/k!
nfjr&ngu nf[k rylh ggk djhAA[1]

कवि रूद्र प्रताप का समय तो गोस्वामी जी के समय से और खराब था जहाँ सारी भारत भूमि के लोग बिल्ला रहे थे। भारत माता की परतंत्रता अंग्रेजों के कुकृत्यों द्वारा ही हुई थी। यह ऐसा फांस है जो सबको बेधता है और अंग्रेजों के प्रति घृणा की भावना पैदा करता है। कवि रुद्र प्रताप अंग्रेजों से ऐसी भावना नहीं रखते अन्यथा उनके वर्णन द्वारा रास किंग मनु के समान धरती को न भोगता। यहाँ हम आलोचना प्रत्यालोचना के पचड़े में न पड़कर इस निष्कर्ष पर तो पहुँचते हैं कि सामन्ती और राजशाही मानसिकता के होते हुए भी कवि अंग्रेजी

1 तुलसीदास : कवितावली (उत्तरकाण्ड) पद 97, पृष्ठ सं0 151–152

राज और पराभूत भारत–भूमि की स्थिति से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। इसीलिए तो वह ^xM fcc l gb efnuh* की कातर भाषा का प्रयोग करता है।

रामखण्ड रामायण में उपयुक्त स्थान पर अपने राज्य–काल को कवि ने राम–कथा के प्रसंगों के समानान्तर रखने का भरपूर प्रयत्न किया है और उसे काव्य में स्थान देता है। राजपथ इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। कुल मिलाकर कवि ने समय, परिस्थिति, युग–सत्य हर बिन्दुओं पर अपनी एक विशिष्ट दृष्टि रखने का प्रयत्न किया है। उसकी रामखण्ड जैसी विशाल कृति इसीलिए बहुत समृद्ध हो उठी है।

(ग) रचनाकाल

कवि रूद्र प्रताप सिंह ने 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण' की रचना सन् 1820 से 1827 के मध्य की थी। 'रामखण्ड रामायण' के समापन के लिए कवि को लगभग 7 वर्ष तक साधना करनी पड़ी। ये सात वर्ष उस समय राजनैतिक दृष्टि से उथल–पुथल के वर्ष थे। अपनी संस्कृति और जातीय गौरव को बचाये रखना लोगों के लिए एक बड़ी चुनौती थी। कवि ने जगह–जगह युग–बोध और युग–पीड़ा के चित्र भी उपस्थित किये हैं। अंग्रेजी राज्य का एक सच्चा इतिहास इस ग्रन्थ से उद्‌घाटित होता है।

रामखण्ड रामायण का प्रकाशन कवि रूद्र प्रताप सिंह के पौत्र राम प्रताप सिंह ने कराया था। राजा राम प्रताप सिंह हिन्दी प्रेमी तथा स्वयं कवि भी थे। इस ग्रन्थ का उन्होंने राम भक्तों के लिए बिना मूल्य का वितरण कराया। फिर भी इसका प्रचार प्रसार न हो सका। इसकी छपायी भी वैज्ञानिक विधि से नहीं है। इसका अध्ययन, और रखरखाव जटिल है। माण्डा में आज भी कुछ घरों में रामखण्ड रामायण का पाठ होता है।

इस प्रकार कवि की काव्य साधना का समय अंग्रेजों के प्रभुत्व का समय

था। कवि को रामकथा के लिए भाव–भूमि सुलभ हो गयी थी। इसका लाभ कवि ने अपनी रचना में उठाया और इतना विशाल काव्य लिखने में सफल रहे।

(घ) ग्रन्थ प्रकाशन का समय

सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण का प्रकाशन सन् 1901 से 1911 के मध्य हुआ। इस ग्रन्थ का प्रकाशन कवि के पौत्र माण्डा नरेश राम प्रताप सिंह की आज्ञा से महामहोपाध्याय पं0 सुधाकर द्विवेदी ने किया। द्विवेदी जी ने यत्र–तत्र पदों को शुद्ध करने का भी प्रयत्न किया है। प्रत्येक प्रकाशित काण्डों के आवरण पृष्ठ पर ही लिखा है–

महाराज श्री 5 रूद्रप्रताप सिंह के पौत्र विद्यमान मांडा महीमहेन्द्र श्री 5 राम प्रताप सिंह बहादुर की आज्ञा से महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी ने शुद्ध कर प्रकाश किया। प्रत्येक काण्डों के आवरण पर एक सोरठा भी छपा है–

jke i`rki & i`lkn ikb l|/kkdj 'k) fd;AA

राजपथ की भूमिका में पं0 सुधाकर द्विवेदी विरचित एक दोहे से इस बात की पुष्टि होती है कि राम प्रताप सिंह और द्विवेदी जी ने संयुक्त रूप से रामखण्ड रामायण को शुद्ध और सम्पादित किया था–

#n`i`rki l|jfpr ;g dFkk len` vikjA
ge r|e fefy gfjtuu fgr fojp` l`r| l|/kkjAA[1]

रामखण्ड रामायण को द्विवेदी जी ने सम्पादित तो किया लेकिन लोक–अपवाद की चिन्ता उनके मन को मथ रही थी। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि राजाश्रय की बात तो आड़े आ ही रही थी। इस संदर्भ में सम्पादक पं0 द्विवेदी की स्थिति देखने लायक है–

1 रामखण्ड रामायण, उत्तरकाण्ड की भूमिका, पं0 सुधाकर द्विवेदी, दो0 57, पृ0 20

jkedFkk&Hkkjr fcykfd ;g d:r dfo dgx l/kkdj djkj yk[k ik, gA[1]

द्विवेदी जी कवि प्रतिभा के धनी तथा संस्कृत, ज्योतिष, गणित के प्रकाण्ड विद्वान थे। इन्होंने ज्योतिष शास्त्र, हिन्दी, संस्कृत के लुप्तप्राय प्राचीन ग्रन्थों को प्रकाश में लाने तथा अपनी व्याख्या, भाष्य एवं उत्पत्तियों से सुबोध बनाने में अपनी प्रतिभा का जो चमत्कार दिखलाया है वह विद्वानों को आश्चर्य में डाल देता है।

पं0 सुधाकर द्विवेदी जी का जन्म वाराणसी में खजुरी नामक गाँव में हुआ था। यह गाँव आजकल वाराणसी कचहरी के पूर्व में स्थित एक मुहल्ला है। इनका जन्म सन् 1860 में हुआ कथा।[2]

महामहोपाध्याय पं0 सुधाकर द्विवेदी ने संस्कृत तथा हिन्दी में अनेक पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थों की रचना की हैं इन्होंने अनेक ग्रन्थों का संशोधन कर प्रकाशित किया। इनके द्वारा रचित टीकाएँ केवल व्याख्या न होकर मौलिक ग्रन्थ के समान हैं राजा राम प्रताप सिंह से इनका मित्रवत् व्यवहार था। भूमिका में सर्वत्र द्विवेदी जी ने राम प्रताप सिंह के प्रति श्रद्धा–भाव प्रकट किया है।

पं0 सुधाकर द्विवेदी जी ने राजपथ की भूमिका के अन्तिम दोहे में लिखा है–

uxjlfuf/kfo/keku lcr vkf'ou ifrinkA
flr exyfnutku fd;k l/kkdj ij ;fgAA[3]

अर्थात् राजपथ का प्रकाशन आश्विन मास के दिन मंगलवार को हुआ था। इसके पूर्व कभी इसकी प्रतिलिपि (पाण्डुलिपि) तैयार करायी गयी होगी, सम्भवतः

---

1 रामखण्ड रामायण, उत्तरकाण्ड की भूमिका, पं0 सुधाकर द्विवेदी, कवित्त 1/59, पृ0 20
2 काशी की पाण्डित्य परम्परा, बल्देव उपाध्याय, पृ0 301, संस्करण, 1994
3 रामखण्ड रामायण, पं0 सुधाकर द्विवेदी, राजपथ की भूमिका, दो0 63, पृ0 20

उस समय प्रतिलिपियाँ कुछ राजाओं के यहाँ सुरक्षित भी रही हों। प्रतापगढ़ के राजगृह में भी रामखण्ड रामायण की प्रतिलिपि सुरक्षित थी। यह संभव भी है कि ये प्रतियाँ बलरामपुर (प्रतापगढ़) राजघराने में माण्डा नरेश की रिश्तेदारी के कारण पहुँची होंगी। कालान्तर में हो सकता है यही प्रति डा0 श्याम सुन्दर दास की खोज रिपोर्ट का आधार बनी हो। इस ग्रन्थ की प्राप्त पाण्डुलिपियों का उल्लेख काशी नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में है। इस ग्रन्थ के लिए वस्तुतः सर्वप्रथम प्रामाणिक उल्लेख वहीं उपलब्ध होता है। खोज रिपोर्ट का विवरण इस प्रकार है– हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का विवरण (भाग–1) सम्पादक डा0 श्याम सुन्दर दास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित सवत् 1970।

इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ को अधिकतर लोग जानते तक नहीं थे। वर्षों तक जन–सामान्य ही नहीं, गम्भीर अध्येता भी इस साहित्य से अपरिचित रहे। बहुत दिनों तक रामकथा की यह अनूठी कृति अंधेरे में पड़ी रही। डा0 रेवरेंड फादर कामिल बुल्के जैसे गम्भीर विद्वान ने भी अपने शोध प्रबन्ध में इसकी चर्चा नहीं की। सन् 1955 में सर्वप्रथम डा0 जयशंकर त्रिपाठी ने अपने एक निबंध के माध्यम से इसे लोगों से परिचित कराया। डा0 त्रिपाठी हिन्दी और संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान हैं। अतः उन्होंने अपने क्षेत्र विशेष के कवि राजा रुद्रप्रताप सिंह को प्रकाश में लाने का स्तुत्य कार्य किया अन्यथा आज तक यह ग्रन्थ मूल्यहीन बना रहता। डा0 जयशंकर त्रिपाठी ने सबसे पहले रामखण्ड रामायण को हिन्दी का महापुराण कहकर पाठकों का ध्यान इस ग्रन्थ की ओर खींचा।[1]

सम्पूर्ण सात पथों (काण्डों) का प्रकाशन नौ पुस्तकाकार रूपों में हुआ है। किष्किंधापथ को छोड़ प्रत्येक पथ एक–एक जिल्द में ही है। किष्किंधापथ का प्रकाशन तीन जिल्दों में है। रामखण्ड रामायण का मुद्रण गौरी शंकर लाल द्वारा

1 डा0 जयशंकर त्रिपाठी, दैनिक भारत, इलाहाबाद, रविवासरीय परिशिष्ट, 12 जून 1955

चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस में किया गया था।

lfl)kUrkRre jke[k.M jkek;.k vo/kh egkdk0;

	iFk	idk'ku o"k
1.	वंशपथ	1901 ई0
2.	कोशलापथ	1902 ई0
3.	अटवीपथ	1904 ई0
4.	किष्किन्धापथ (पूर्वार्द्ध)	1906 ई0
5.	किष्किन्धापथ (उत्तरार्द्ध, भाग–1)	1906 ई0
6.	किष्किन्धापथ (उत्तरार्द्ध भाग–2)	1906 ई0
7.	दूतपथ	1907 ई0
8.	युद्धपथ	1908 ई0
9.	राजपथ	1911 ई0

प्रकाशक–गौरीशंकर लाल (मैनेजर) चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस सिटी।

इतने विशालकाय ग्रन्थ का मुद्रण एवं प्रकाशन भी बड़े परिश्रम की बात है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में लगभग 3700 पृष्ठ हैं। वास्तव में यह ग्रन्थ महापुराण ही है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक पं0 द्विवेदी बड़े सरसहृदय तथा भक्त व्यक्ति थे। इनके उपास्यदेव भगवान राम थे। ये मानस का नित्य पारायण किया करते थे जिसे पढ़ते–पढ़ते इनकी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती थी। इन्होंने इस ग्रन्थ के आदि और अन्त में भगवान् राम की ही स्तुति की है।

पं0 द्विवेदी के द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इस प्राचीन ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रतियों को एकत्र कर उनके पाठों का मिलान कर उन्हें सम्पादित किया है। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ को सरल, सुबोध, तथा बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है। जिससे साधारण पाठक भी इस दुरुह ग्रन्थ

का मर्म आसानी से समझ सकें।

(ङ) काव्य के माध्यम से धर्म और साधना का उपदेश

धर्म के पालन से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा विश्वहित–साधन में बड़ी सहायता प्राप्त हो सकती है। मनुष्य धर्म का पालन कर अपने विकास की चरम सीमा तक पहुँच सकता है।

इस प्रकार मानव का धर्म है जगत् में जितने प्राणी उत्पन्न हैं, उन सबकी जीवन–यात्रा सुविधा से जैसे चले, ऐसा लक्ष्य निर्धारित कर जो धर्म वेदों में और शास्त्रों में विहित है, उनके आचरण से अपना और जनसमुदाय का भला करना यही धर्म का रक्षण है।

इस तरह रक्षित हुआ धर्म प्राणिमात्र का पालन करता है। धर्माचरण में लगने वाले मानवों को उचित सुख–भोग देकर जो आत्मज्ञान का पात्र बनाता है, वह धर्म है। मानव आत्मज्ञान से ब्रह्म में अभिन्न रूप होकर सच्चिदानन्द परमात्मा में लीन होता है। यही मानवजन्म की परिपूर्ति और परम प्रयोजन है।

'रामखण्ड रामायण' में कवि का परम प्रयोजन है धर्म और साधना का निरूपण। कवि वैष्णव धर्म का अनुयायी है और वैष्णव धर्म की प्रतिपूर्ति हेतु कवि काव्य (राम–कथा) को माध्यम बनाता है। चूँकि कवि राम–कथा का गुणगान करने में स्वयं प्रवृत्त है इसलिए उन्हें धर्म–प्रतिपादन में सुविधा हो जाती है।

'रामखण्ड रामायण' में कवि जहाँ भी धर्म और साधना की धारा प्रवाहित करते हैं वहाँ उनका वैष्णव प्रेम प्रभावी हो उठता है।

गोस्वामी तुलसीदास ब्रह्म के दो स्वरूप मानते हुए भी स्वीकार करते हैं कि भक्तों के हित के लिए भगवान राम ने नर तन धारण किया–

vxu lxu nb cã l:ikA vdFk vxk/k vukfn vuikAA[1]

rFkk

jke Hkxr fgr uj ru /kkjhA lfg ldV fd, lk/k l[kkjhAA[2]

अतः यदि कवि ने भी रामावतार की बात कही जो कि वैष्णव–परम्परा सम्मत है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

कवि राम को ही अपना इष्ट मानते हैं–

v| lQy ee Ør| le HkkjA nh?k dky r| riu vikjAA
rfg ri dj egkQy ,ghA ro in itu jek&lughAA
lg lhrk ee fgn; ek| dfjm| jke fclkeA
xPNfr fr"Bfr t= d|r yxh jgb fLer ukeAA[3]

कवि कहते हैं कि श्री रघुनन्दन ही भक्ति और मुक्ति के कारण हैं। अतः हमें श्री राम के नाम की ही साधना करनी चाहिए। क्योंकि कवि अन्य किसी भी देव को स्वीकारने को तैयार नहीं।

HkfDr&efDr&dkju j?kunuA ftfe lkjHk dkju ny pnuAA[4]

कवि धर्म का वर्णन भागवत धर्म के अनुसार ही करता है। भागवत धर्म के अनुसार प्रभु अवतारी हैं। कवि कहते हैं कि वह सेवक है और श्री राम उसके साहब हैं। वह भक्त हैं और रघुराई साहेब उसके आराध्य हैं–

lod ge lkgc j?kjkbA ;g fcpkfj dj pg| tg| tkbAA
lkxj ty ftfe Hkfexr ifu lkxj ifclkrA

---

1 रामचरितमानस, बालकाण्ड, गोस्वामी तुलसीदास, दो0 23, चौ0 1
2 रामचरितमानस, बालकाण्ड, गोस्वामी तुलसीदास, दो0 24 चौ0 1
3 रामखण्ड रामायण, अटवीपथ, दो0 63, चौ0 7–8, पृ0 33
4 रामखण्ड रामायण, अटवीपथ, दो0 83, चौ0 3, पृ0 41

frfe j?kcj r fcLoP;r y;kdky rg tkrAA[1]

कवि अपने काव्य के माध्यम से यह उपदेश देना चाहते हैं कि राम–तत्व ही समस्त सांसारिक समस्याओं का समाधान है–

jkerRo ljcLo fu/kkukA fcX; rX; ,d gj HkxokukAA[2]

कवि वैष्णव धर्म के प्रतिपादन और प्रमाण के लिए कहता है कि कुछ दूसरी कथाओं का श्रवण कीजिए जिससे भक्ति बढ़ेगी। कवि अन्य कथा प्रसंगों के माध्यम से राम की भक्तों पर कृपा का गुणगान करते हैं।

कवि ने काव्य के माध्यम से जीव एवं ब्रह्म की एकता का अद्भुत निदर्शन प्रस्तुत किया है। वह लिखते हैं कि ईश्वर की कृपा के अभाव में अज्ञान रूपी अंधकार का नाश नहीं होता। अद्वैतवादी साधक माया के जाल में फँसता नहीं है। माया और भक्ति दोनों प्रभु की पत्नियाँ हैं। माया के जाल में फँसकर जीव अपना विनाश करता है और भक्ति का आश्रय ग्रहण करके जीवन को धन्य करता है। निर्मल–बुद्धि सम्पन्न साधक माया में लीन नहीं होता।

कवि परम्परा में प्रचलित पाँच उपासना पद्धतियों का भी उल्लेख करता है–

cLuo lo lkfDr xkutkuuA
lkj ;gh lj e[; mikluAA[3]

ये पद्धतियाँ वैष्णव, शैव, शाक्त, गाणपत्य और सौर है।

कवि लिखता है कि रामकथा–चरित का श्रवण करने वाला अक्षय पुण्य–फल का भागी होता है। वह श्रवण–पद्धति के नियम भी बताता है–

/ku lefUor Lou lk dklkA cL= fofo/k tk nofg 0;klkAA

dju dMy tk d: nkuA vxyh; jRukV; egkuAA

---

1 रामखण्ड रामायण, वंशपथ, द्वितीय विश्राम दो0 68, चौ0 6, पृ0 20
2 रामखण्ड रामायण, वंशपथ, चतुर्थ विश्राम, दो0 86, चौ0 7, पृ0 27
3 रामखण्ड रामायण, राजपथ, विश्राम 55, दो0 1035, चौ0 7, पृ0 493

lTtkeu ifu N= ifc=A u0; mikug djd fofp=AA
fØfr djh /kjuh rfg nh tA ck,m fcf) djfg cg chtAA
fjr jl lfgr vUu ifu nkuA ukx i= ifu lfgr fc/kkuAA
HkPN HkkT; ukuk voyqgA pkLo fjf) er 0;klfg nqgAA
,fg fof/k lfufg jek;u tkbA fdll okfte[k lgl u lkbAA
okfti; e[k lr Qy ikÅA lflm lx lfu feny lHkkÅAA

xqxkfnd ftr lfjr efg dkuu ubfHk[k vkfnA
iHkfr i;klfg rhFk ftr fdl lou iy ckfnAA[1]

यहाँ कवि कथा सुनाने वाले व्यास के लिए गाय, स्वर्ण, रत्न, छत्र, जमीन इत्यादि के संकल्प करने का विधान करता है। यह सामर्थ्य एक राजा ही रख सकता है। साधारण मनुष्य के लिए ऐसा असम्भव है। कवि राजसी एवं सामन्ती विचारधारा से प्रभावित है।

वाल्मीकि तो राम की उपासना एवं राम—नाम—ग्रहण के लिए कहते हैं कि वो नाम तथा जाति आदि विकल्पों से रहित, कार्य—कारण से परे हैं, वही ईश्वर है। साक्षात्कार पुराणों वेदों रामायणादि के द्वारा हो जाता है—

;k uke tkR;kfnfodYighu%
ijkojk.kk ije% ij% L;krA
onkUro|% Lo:pk idk'k%
l oh{;r lo ijk.kon%AA[2]

वाल्मीकि भी कथावाचक अथवा व्यासादि के लिए अपनी शक्ति के अनुसार वस्त्र, स्वर्ण, रामायण आदि की पुस्तकें भेंट करने का उपदेश देते हैं। क्योंकि वे

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ, विश्राम 47, दो0 787, चौ0 1—8
2 वाल्मीकि रामायण, प्रथम अध्याय, श्लोक—30

श्रोता के ऊपर लक्ष्मी सहित भगवान् विष्णु प्रसन्न होते हैं और व्यास के प्रसन्न होने से तो तीनों देव प्रसन्न हो जाते हैं–

> JRok prUegkdkO; okpd ;Lr it ;r
> rL; fo".k% ilUu% L;kfPN;k lg f}tkRrek%
> okpd ihfrekiUu cãfo".keg'ojk%
> ihrkHkofUr foiUnk uk= dk;k fopkj.kk
> jkek;.kokpdk; xkok oklkfl dk´pue
> jkek;.kiLrd p n|kr foRrkulkjr%
> rL; i.;Qy o{; J.k/o llekfgrk%
> u ckU/kr xgkLrL; Hkrorkydkn;%
> rL;o loJ;kfl o)Ur pfjr Jr
> u pkfXuckk/kr rL; u pkjkfnHk; rFkk
> ,rTtUekftr% iki% l| ,o foeP;r
> llro'klerLr ngkUr ek{keklu;krA[1]

कवि वाल्मीकि अन्यत्र लिखते हैं कि जो प्रतिदिन राम की कथा का श्रवण करते हैं उनके लिए न तीर्थ की आवश्यकता है, न तपस्या की, न यज्ञ की और न गोदान की–

> fd rhFkxkinkuok fd rikfHk% fde/ojA
> vgU;gfu jkeL; dhrlu ifjJ.orkeAA[2]

कवि रूद्र प्रताप और वाल्मीकि के विचारों में यहाँ पर्याप्त अंतर है। रूद्रप्रताप स्वर्ण रत्न दान आदि की अनिवार्यता बताते हैं और वाल्मीकि वित्त एवं सामर्थ्य के अनुसार ही दान करने की बात करते हैं। यहाँ वाल्मीकि की मान्यता अपेक्षाकृत कवि रूद्र प्रताप से अधिक व्यावहारिक प्रतीत होती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राम नाम की उपासना से मनुष्य पुण्य

---

1 वाल्मीकि रामायचण, पंचम अध्याय, श्लोक 54–59

2 वाल्मीकि रामायण, पंचम अध्याय, श्लोक 66

का भागी होता है। कवि ने अच्छे चरित्रों की सद्गति और बुरे चरित्रों की दुर्गति दिखायी है। बुरे चरित्रों का विनाश राम करते हैं। कवि ने दोनों चरित्रों के अनेक उदाहरण अपने काव्य के माध्यम से दिये हैं–

xkgk f}tgk LojuLr;hA fe=krd v: vkloi;hAA
x#nkgh x#lTtk xkehA jefg tk r jgfr; lk dkehAA
vkLodyi Hkfj jkjo ekghA lg dkfV n[k fudj ukghAA
feF;klk{kh d: tk lkbA jkjo ckl dyi Hkfj gkbAA
jkjovkfn ujd t gkbA dfj lekl cjum rg lkbA[1]

ऐसे लोगों को रौरव नरक मिलता है। जिसके मन में हम–हमार की भावना रहती है, जो जगद्रोह करता है – वह रौरव नरक में पड़ता है।

विप्रहन्ता और मद्यपी घोर कष्ट और दण्ड के भागी होते हैं–

gufg fci v# Loku tk e|iku v: r;A
r lc ldje[k ijfg nokrd vkn;AA[2]

कवि धर्म का वर्णन भागवत धर्म के अनुसार करता है। भागवत धर्म के अनुसार प्रभु अवतारी है। असुरों के कुकर्मों से पीड़ित धरती के उद्धार के लिए ही राम का अवतार होता है। रावण, घटकर्ण (कुम्भकर्ण), मेघनाद आदि अत्याचारी असुर हैं, जिनसे धरा पीड़ित थी–

jko.k v: ?kVd.k e?kukn vljkfn dfjA
vkjr Hk lc c.k ihfMr [kx fex /kjk lgAA[3]

राम का चरित्र अद्भुत, सहज, लौकिक–अलौकिक, असाधारण–साधारण, कोमल–कठोर, लोकमंगली, शत्रुनाशक, आर्य धर्म, संस्कृति और सभ्यता का रक्षक, दैत्यविनाशक, गो, द्विज और मर्यादा रक्षक है। उनका चरित्र, शक्ति–शील,

---

1 रामखण्ड रामायण, बालकाण्ड, दो0 104, चौ0 1–5, पृ0 36
2 रामखण्ड रामायण, बालकाण्ड, दो0 105, पृ0 37
3 रामखण्ड रामायण, बालकाण्ड, सो0 135, पृ0 51

सौन्दर्य, सौभाग्य, संस्कृति, सभ्यता और आदर्शों से मण्डित है। वे सभी रूपों में आदर्श हैं। वे आदर्श पति, पुत्र, योद्धा, राजा, भाई और पुरुष (पुरुषोत्तम) हैं। उनका चरित्र लोकोत्तर है– जिसका भक्तगण गुणगान करते हैं। शास्त्र उनकी स्तुति करते हैं। उनकी महिमा अपार है।

राम के उक्त समस्त वैशिष्ट्य राम के तो हैं ही, साथ ही वे कवि की श्रद्धा प्रसूत भी हैं। जैसा कि गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने नारी के विषय में कहा कि वह शुद्ध विधाता की रचना नहीं है उसे पुरुष ने मिलकर गढ़ा है, उपमा के धागों से उसका वस्त्र बुना है..... और इस प्रकार से वह आधी तो नारी है ओर आधी कल्पना है।

प्रत्येक कवि भी इसी प्रकार अपने नायक को गढ़ता है। आधा तो वह परम्परा से स्थापित मूल नायक होता है और आधा कवि विशेष की दृष्टि, युग–बोध एवं कवि के दर्शन के अनुसार अभिधानित होता है।

कवि रूद्र प्रताप ने इसी प्रकार वाल्मीकि, तुलसी आदि के द्वारा वर्णित एवं जनमानस में अंकित राम की छवि को अपनी उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं के द्वारा संजोया और संवारा है।

———————